रात्रि क्लास 13-7-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चों को सदैव हर्षित रहना चाहिए। मुस्कराते रहना चाहिए। क्योंकि बाप द्वारा इतना ऊंच ते ऊंच वरसा पाते हो। अगर ठीक रीति से पुरुषार्थ करो तो। ऐसे बहुत बच्चे हैं जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं। जब बच्चे समझाते हैं जैसे कहते हैं तुम अपने बाबा(दादा) को भगवान कहते हो। तो चिरंजीवी लाल बच्चे ने अच्छा सुनाया। कि ऐसे जो कहते हैं उनको हम कहते हैं तुम कुत्ते बिल्ले, कच्छ मच्छ को भगवान कहते हो, हम तो फिर भी मनुष्य को कहते हैं। बच्चे ने रेसपान्ड अच्छा दिया। पढ़ाने वाले से भी पढ़ने वाले ऊंच जा सकते हैं। यह तो कामन बात है। यह बच्चा भी अच्छा खुशी में रहते हैं। ऐसे2 बहुत मेन्टर भी चल सकते हैं। है बहुत सहज। सेकण्ड का ज्ञान है। सेकण्ड भी चपटी पर है। सेकण्ड में तुम बाप से वरसा पाते हो। तुमको समझाया जाता है दो बाप है। एक हद का दूसरा बेहद का। वह हैं हद के क्रियटर, वह बेहद का क्रियटर। दोनों से चपटी में वरसा मिलता है। बाप माना वरसा। यह बच्चा पैदा हुवा वरीस पैदा हुआ। यह भी अपने को समझते हैं हम आत्मा है। तो बाप से वरसा मिलता है। शिव बाबा की जयन्ति भी मनाते हैं। बाबा तो जरूर कहते हैं ना। उनका नाम सदैव शिव ही है। शिव बाबा के तुम बच्चे बने हो तो बेहद का वरसा मिलता है। सिर्फ किसको समझ में बैठे। पत्थर बुधि है ना। भारत ही था और कोई धर्म नहीं था। कितना गपोड़े लगा दिये हैं। बाप आकर समझाते हैं। भक्ति मार्ग गपोड़ा मार्ग है। एमआबजेक्ट कोई है नहीं। तो गपोड़े ही ठहरे। बाप तो आकर स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। यह त०ना० विश्व के मालिक हैं ना। जरूर ऐसी पढ़ाई पढ़ी है। ऐसे काम किये हैं। राजयोग भी मशहुर है। जरूर आगे जन्म में राजयोग सीख राजाएं बनें हैं। संगम युग पर ही बाप आते हैं। समझाना भी सहज लगता है। परन्तु पत्थर बुधि के समझ में नहीं आता। तुम हो ब्राह्मण। यह भी सहज समझाना है। विराट रूप से भी वाजेली सिध होता है। विष्णु को ही विराट रूप में ले जाते हैं। यह भी समझते विष्णु 4भुजा वाला दो मेल के दो फिमेल की बाहें हैं। चतुर्भुज डान्स भी करते हैं। चार भुजाओं वाला तो कोई होता नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा है ना। बच्चे बृ= वृधि को पाते रहते हैं। कितने भुजाएं हो जायेंगे। एडम की कितनी भुजाएं होंगी। 500करोड़ आदमी तो दस सो करोड़ भुजाएं हो जायेंगी। अभी तुम बच्चे समझ गये हो भक्ति मार्ग में तो वेस्ट आफ टाईम, वेस्ट आफ इनर्जी, वेस्ट आफ मनी गई। बाप अभी बिल्कुल राईट समझाते हैं। नुग मनुष्य से देवता बनते हो ना। आधा कल्प टाईम वेस्ट हुआ भक्ति का। भक्ति मार्ग का टाईम वेस्ट दुःख भी बहुत। इनर्जी भी चली जाती है। आयु भी कम। अकाले मृत्यु हो जाती है। तुम समझते हो यह पुराना छी छी घर है। नई और पुरानी में फर्क तो है ना। बाप भी कहते हैं मीठे2 बच्चे कलियुग पुराना सतयुग नया है। सारी पुरानी दुनिया यज्ञ में स्वाहा हो जाती है। कोई भी पुरानी चीज़ वहां काम में नहीं आती। आत्मा और शरीर सभी नई बन जाती है। आत्मा तो अविनाशी है फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाती है। शरीर तो नया बनता है ना पुराना ते पुराना सो फिर नया बनता है। इनका बूट तुम्हारी जुती पुरानी ते पुरानी है। फिर इनको नया बूट तुमको नई जुती मिलेंगी केमखाव की। सच्चा केमखाव कब कालानहीं होता है। तुमको तो सदैव हर्षित रहना चाहिए। बाप भी तुमको ऐसे हर्षित बनाते हैं। वह सदैव हर्षितपना रहना चाहिए। इनके लिए ही कहेंगे कर्मातीत अवस्था को पाया हुआ है। इनके मुख से सदैव खुशी जलवा दिखाये रहे हैं। सदैव खुशी का जलवा रहना चाहिए। अति ईन्द्रिय सुख हो तब मुख जलवा दिखाये। वह अवस्था पिछाड़ी को होनी है। भिरवा मोत मलुका शिकार। तुम खुश होते रहेंगे। खुशी से कहते हैं बाबा आकर पावन बनाओ तो जरूर पतित शरीर खलास होगा ना। कालों के काल को बुलाते हो। काल काल महाकाल भी कहते हैं ना। शिव का मंदिर भी है फिर महाकाल का भी मंदिर है। अर्थ नहीं समझते हैं। पढ़ाई तो बड़ी सहज है। बड़ी ते बड़ी भी है। इतनाऊंच ते ऊंच दर्जा कब मिलता नहीं। कितनी भारी पढ़ाई है। 20-22 वर्ष पढ़ाई पढ़ते हो। उनकी चाहिए डबल। 40 वर्ष एक ही बाप एक ही टीचर पढ़ाते हैं। सब का सदगति दाता एक ही है। गति सदगति दाता

बाप कहते हैं सभो जीवन मुक्त हो जाते हैं। मुक्ति के बाद फिर जीवन मुक्ति का पार्ट होता है। सर्व का सदगति दाता। सिर्फ गति नहीं। तुम बच्चे अच्छी रीत जान गये हो। इतने चित्र आदि बनाते हो। धीरे2 झाड़ बढ़ता जावेगा। बच्चों को भी शौक तो होता है ना। हद में भी नहीं ठहर जाना चाहिए। बाबा कहां भी सर्विस पर भेजो। तैयार रहना चाहिए। ऐसे नहीं यहां रहेंगे। बदली होने से हृदय विदीर्ण न होना चाहिए। बाबा जानते हैं बेहद में सर्विस करने लायक हैं। कहेंगे यहां न यहां जाऊं तो बाबा समझ जाते हैं यह बेहद की सर्विस करने लायक नहीं हैं। भगवान कहे और बहाना बातवे तो नापास हो जावे। भगवान की डायरेक्शन अमल में लानी पड़े। नहीं तो कहेंगे कच्चे। फिर उनको कहा जाता है नाफरमानबरदार। मानेंगे तो कहेंगे फरमानबरदार। बाप सहज कर भेजते हैं ना। वह अपने को नालायक अर्थात न लायक समझते हैं। बेहद के बाप का डायरेक्शन न माने तो उनको क्या कहेंगे। ऐसे नम्बर वाले बच्चे हैं कहां भी कहो चले जावेंगे। कोई खिट2 करेंगे। बेहद की बाप की आज्ञा तो जरूर माननी चाहिए। बेहद का वरसा देते हैं ना। हद के बाप की आज्ञा तो उलंघन करते हैं। बेहद की बाप की आज्ञा उलंघन करनी न चाहिए। परन्तु राजाई है तो कम पद वाले भी चाहिए ना। कहां मालिक, कहां साहुकार प्रजा कहां कम प्रजा। तो आज्ञाकारी बन ऊंच ते ऊंच लायक बनना चाहिए ना। गीत भी है ना प्यार करो चाहे ठुकराओ हम आप के ही मानेंगे। बेहद के बाप का मानने में कल्याण ही होगा। बाप आये हैं बे विश्व का मालिक बनाने। आलमाईटी है ना। आने से ही राजधानी स्थापन करते हैं। और कोई राजधानी थोड़े ही स्थापन करते हैं। बेहद की बादशाही बच्चों को मिलती है। बच्चों को तो सदैव हर्षित रहना चाहिए। ऊंच पद पाने वाले जरूर हर्षित हो रहेंगे। बड़ी भारी स्कालरशिप है। बच्चों को स्कालरशिप मिलती है ना। इसमें पुरुषार्थ करना है। बाप की याद में रहें। भक्त लोग कहते हैं मौत हो तो गंगा का तट हो। यहां फिर कहते हैं शिव बाबा ही याद हो। और कोई याद न हो। ममत्व तोड़ देना चाहिए। एक से जोड़ना है। पुराने से तोड़ नया से जोड़ना है। नया सम्बन्ध नई दुनिया से। सुनाते तो बहुत मीठी-मीठी बातें हैं। मीठे-मीठे बच्चे सुनते भी हैं फिर सुनाना चाहिए बच्चों को। ऐसे नहीं समझना शिव बाबा अपनी महिमा करते है। बच्चे महिमा करते हैं। बाप कहते हैं मैं तो गुलाम हूं तुम्हारा। नमस्ते करते हैं ना। निराकारी निरअहंकारी गाया हुआ है ना। ड्रामा का पार्ट है अनेक बार बजाया है। बजाते ही रहेंगे। नई बात थोड़े ही है। यह भी समझते हैं भक्ति की पूजा नहीं की जाती। समझाया जाता है। यह तो भक्ति मार्ग फिर भी जरूर होगा। फिर बाप आकर ज्ञान मार्ग में स्वर्ग में ले जावेंगे। यह है खेल। घाटे की बात नहीं। सन्यासी है ही निवृति मार्ग वाले। तो उन से मेहनत करना ही फालतू है। पहले2 शिव के भक्तों को, देवताओं के भक्तों को समझा सकते हो। उनको बुधि में जल्दी बैठेगा। बाप फरमान करते हैं मीठे2 बच्चे मैसेन्जर पहुंचाते रहो। फिर और समझाना चाहिए तो भल समझाओ। पहले पहले बाप का परिचय। लौकिक पारलौकिक बाप का समझाओ। तब फिर अलौकिक का समझा सकते हैं। क्योंकि निराकार बाप को रथ चाहिए ना। वरसा मिलता है लौकिक पारलौकिक से। अलौकिक से क्या मिलेगा। हद और बेहद का वरसा दोनो ही हैं। बाकी क्या मिलेगा। हां पारलौकिक का अलौकिक द्वारा मिलेगा। बच्चों को पायन्ट सुन कर धारण कर फिर सुनानी है। तोते मिसल नहीं समझाना है। हड्डी समझा हुआ हो तो प्रश्न का उत्तर अच्छी रीत दे सके। अच्छा मीठे2 बच्चों को कहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रही हुई पॉयन्ट्स:-(11-7-68 रात्रि) यह तो समझते हैं विनाश सिर पर खड़ा है। तुम इसके लिए ही बाप को बुलाते हो। आकर स्वर्ग की स्थापना की स्थापना करो। बाप सभी को मौत के घाट उतारो। आत्माओं को ले जाओ। सन्यासी भी कहते हैं ब्रह्माकुमारियां हिन्दुधर्म का विनाश चाहती हैं। उसका भी जवाब देने वाला हो। बात ठीक है। हिन्दुधर्म बदली देवता बनना है। हिन्दुधर्म का विनाश कर उसके बदली देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। ऐसी रेसपान्ड जावे तो सभी कहे वाह स्वर्ग में भी हैं सिर्फ देवताएं। तो तुम बच्चों को खुशी से शरीर छोड़ना पड़े। ब्रह्मज्ञानी भी ऐसे होते हैं। कहते मुक्ति में जावें। तुम जानते हो ब्रह्म तो हमारा घर है। जबतक हम पतित पावन बाप को याद न करें तो पावन बन न सकें।